

स्वयंप्रभा

मूल्यांकन के नये आयाम

संपादक

डॉ. अनिल सिंह

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

I.S.B.N. : 978-93-90265-07-7

- पुस्तक : 'स्वयंप्रभा' मूल्यांकन के नये आयाम
सम्पादक : डॉ. अनिल सिंह
प्रकाशक : अमन प्रकाशन
104-A/80-C रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.)
मो. : 08090453647, 9044344050
ऑफिस : 0512-3590496
संस्करण : प्रथम सन् 2020
सर्वाधिकार : सम्पादकाधीन
मूल्य : ₹ 550.00 मात्र
मुद्रक : साक्षी ऑफसेट, यशोदानगर, कानपुर
शब्द सज्जा : अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर

SWYAMPARBHA MULYANKAN KE NAYE AAYAM
Edited by : Dr. Anil Singh
Price : Rs. Five Hundred Fifty Only

❖ चरित्र सृष्टि का हृ - डॉ. राकेश शुक्ल	114
❖ 'स्वयंप्रभा' खंडकाव्य की चरित्र सृष्टि - डॉ. उमेश चन्द्र शुक्ल	121
❖ तपोवनवासिनी स्वयंप्रभा वाया उद्भ्रांत - डॉ. ऋषिकेश मिश्र	125
❖ तपस्विनी स्वयंप्रभा और अन्य चरित्र - डॉ. संतोष मोटवानी	150
❖ 'स्वयंप्रभा' खंडकाव्य के आधार पर कंडु ऋषि, अंगद और जटायु का चरित्र-चित्रण - डॉ. उर्मिला सिंह	160
❖ स्वयंप्रभा : संवेदना के विविध रंग - डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	165
❖ उद्भ्रांत कृत स्वयंप्रभा काव्य में हनुमान एवं स्वयंप्रभा का संवाद - डॉ. रमा सिंह	169
❖ प्रकृति, पर्यावरण और स्वयंप्रभा - श्री रणजीत कुमार झा	175
❖ स्वयंप्रभा : प्रकृति और मानव का अनंत सम्बन्ध - डॉ. एम. एच. सिद्दीकी	183
❖ 'स्वयंप्रभा' का काव्य सौष्ठव - डॉ. प्रमिला अवस्थी	187
❖ स्वयंप्रभा : वस्तु, शिल्प एवं शैली का अभिनव प्रयोग - डॉ. विजय कुमार 'संदेश'	195
❖ स्वयंप्रभा : खंडकाव्य का वैशिष्ट्य - डॉ. मोहसिन खान	202
❖ 'स्वयंप्रभा' खंडकाव्य : उद्देश्य और शीर्षक की सार्थकता - डॉ. अनिल सिंह	210
❖ कवि उद्भ्रांत की 'स्वयंप्रभा' का विश्लेषण - डॉ. महात्मा पांडेय	217
❖ कई-कई कविताओं की है यह अनुभूति - दुर्गावती सिंह	226
❖ 'स्वयंप्रभा' : रामप्रेरित महाकाव्यों में बड़ी उपलब्धि - डॉ. गंगादत्त शास्त्री 'विनोद'	228
❖ पुराण को वर्तमान से जोड़ने वाला काव्य - रामशिरोमणि शुक्ल	237
❖ जीवन और संघर्ष का मणिकांचन संयोग - जनार्दन मिश्र	239

स्वयंप्रभा : संवेदना के विविध रंग

♦ डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर, म.प्र.

'स्वयंप्रभा' हिन्दी के सुप्रसिद्ध महाकवि और गद्य लेखक उद्भ्रांत जी की अत्यंत लोकप्रिय खण्डकाव्य कृति है। समकालीन कविता के दौर में महाकाव्य एवं खण्डकाव्य रचकर कवि ने एक सामान्य सी कथा को व्यापक फलक पर चरितार्थ कर एक दुर्लभ काव्य कृति का सृजन किया है। उन्होंने बहुत कुशलता के साथ खण्डकाव्य स्वयंप्रभा के कथा-विन्यास और उसके मर्म को उभारा है। यहाँ रामकथा से सम्बद्ध एक सर्वथा उपेक्षित चरित्र स्वयंप्रभा के व्यक्तित्व और चिंतन से हम परिचित होते हैं। एक क्षीण-सी कथा किंतु विशिष्ट स्त्री-चरित्र और उसके बहाने हमारे आधुनिक समय और समाज की महत्वपूर्ण समस्या पर्यावरण संकट को लेकर नवीन चेतना भरने का सुंदर प्रयास कवि के पर्यावरणीय चिंतन का नवोन्मेष है। भक्ति, प्रेम, समर्पण, निष्ठा, आदर्श, त्याग, सेवा आदि जीवन मूल्यों के सूत्र भी हमें यहाँ मिलते हैं। इस कृति में मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते की खोज, महत्वपूर्ण विचार है। प्रतिष्ठित आलोचक नामवर सिंह इस कृति की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि "एक लम्बे अरसे बाद एक प्रबंध कविता लिखी गई है। इस कृति में गहरी बेचैनी और व्याकुलता के दर्शन होते हैं जो मनुष्य को महान सृजन के लिए प्रेरित करती है। उद्भ्रांत जी साधक कवि हैं। कबीर जब अन्तः साधना की बात करते हैं तो प्रणम्य हो जाते हैं, फिर उद्भ्रांत की अन्तः साधना को कैसे खारिज किया जा सकता है। कवि का आत्मसंघर्ष स्वयंप्रभा में उभर कर आया है।" (भूमिका से) वास्तव में "स्वयंप्रभा" काव्य में कवि का आत्मसंघर्ष अनेक कथा प्रसंगों में परिलक्षित होता है। हनुमान, स्वयंप्रभा, संपाती, ऋषि कण्डु आदि पात्रों के चरित्र में लेखक को बेचैनी और व्याकुलता को समझा जा सकता है। इस मिथकीय कथा और चरित्र में हमारे आज के समय को देखने की एक सार्थक कोशिश है। इसमें आधुनिकता के संस्पर्श से मूलकथा और चरित्र के वास्तविक स्वरूप को कहीं खंडित करने का प्रयास नहीं किया गया है। बहुत सहज दृष्टि और विमल चेतना